जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में
रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

श्री सम्मेदशिखराय नमः

विशद तीर्थंकर सिद्धक्षेत्र

lr gå_oX{eTaQm|H$nyOZ EoS {dYmZ

मध्य में-ॐ
प्रथम वलय-4
द्वितीय वलय-8
तृतीय वलय-12

रचयिता : प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

कृति - विशद तीर्थंकर सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखर टोंक पूजन

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, पञ्चकल्याणक प्रभावक क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन - सोनू दीदी, किरण दीदी, आरती दीदी, उमा दीदी * 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति (निर्मलकुमार गोधा) 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर 0141-2319907 मो.: 9414812008
2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

मूल्य - 21/- रु. मात्र

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट , जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

पुण्यार्जक

....

....

पुण्यार्जक

1. श्री शशांक जी जैन पुत्र श्री धर्मचन्द जी जैन श्रीमती कविता देवी जैन (सहारनपुर वाले) मो. 9811255066

2. श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन श्रीमती मंजु जैन 80, ओल्ड अनार कली, दिल्ली-51

3. श्री सुकुमालचन्द जी, प्रवेशकुमार जी जैन (टिकरी वाले) ए-35, गली नं. 3, न्यू कृष्णा नगर, दिल्ली-51

तीर्थ वन्दना

तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर दिगम्बर जैन धर्म की शाश्वत ऐतिहासिक भूमि है व अनाधि निधन तीर्थ है। तीर्थराज की एक बार भी भावपूर्वक वन्दना करने वाला भव्य प्राणी नरक तिर्यंच आयु को प्राप्त नहीं होता। तीर्थ क्षेत्र निर्वाण भूमि के स्पर्श मात्र से संसार ताप शान्त हो जाता है। भववर्द्धिनी भावना भवनाशिनी हो जाती है। परिणाम निर्मल ज्ञान उज्ज्वल, बुद्धि स्थिर मस्तिष्क शांत और मन पवित्र हो जाता है। अर्थात् तीर्थ के दर्शन मात्र से पूर्वबद्ध पाप अशुभ कर्म को नष्ट करते हैं। तीर्थ पर मनोयोग पूर्वक यात्रा करने से संसार का भ्रमण छूट जाता है। शास्त्रों का उपदेश, व्रत, चारित्र तप आदि सभी कुछ निर्वाण प्राप्ति के लिए है। यह अनादिकाल सिद्ध प्रसिद्ध सम्मेदशिखर महान् सिद्धक्षेत्र है इस गिरिराज से असंख्यात चौबीसी और अनन्तानन्त मुनिश्वरों ने कर्म नाशकर मोक्ष पद प्राप्त किया। तीर्थंकरों के निर्वाण होने के पश्चात् उस स्थान पर इन्द्र पूजा को आते हैं तथा चरण चिह्न स्थापित करते हैं। वर्तमान चौबीसी में तीर्थराज सम्मेदशिखर के 20 टोंकों से 20 तीर्थंकरों के साथ 86 अरब 488 कोड़ा-कोड़ी 140 कोड़ी 1027 करोड़ 38 लाख 70 हजार तीन सौ तेईस मुनि कर्मों को नाश कर मोक्ष पधारे। इसी कारण भूमि का कण-कण पूजनीय व वंदनीय है। एक बार इस तीर्थ की वन्दना करने से 33 कोटि 234 करोड़ 74 लाख उपवास का

फल मिलता है। प.पू. आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज ने **श्री सम्मेदशिखर वन्दना** नामक इस पुस्तक की रचना बहुत ही सरल भाषा में की है। तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर जी की वन्दना के समय यह पुस्तक अपने साथ रखनी चाहिए। वन्दना करते समय क्रम से जो भी टोंक पड़े वहाँ मधुर शब्दों से उच्चारण पूर्वक मन को एकाग्र करते हुए मंत्रोच्चार पूर्वक अर्घ्य चढ़ाना चाहिए। वन्दना करते समय शुद्ध वस्त्रों का ही प्रयोग करना चाहिए। जूते-चप्पल पहनकर यात्रा नहीं करना चाहिए। क्षेत्र पर यथासंभव खाने-पीने की वस्तुओं का त्याग करके ही वन्दना करनी चाहिए। मधुवन से भगवान कुन्थुनाथ जी की टोंक तथा 6 मील तथा ऊपर समस्त टोंकों की वन्दना का घुमाव 6 मील तथा पार्श्वनाथ से नीचे धर्मशाला तथा आने में 6 मील इस प्रकार 18 मील यानि 27 किलोमीटर की यात्रा है। इस क्षेत्र के कण-कण में अनन्त आत्माओं की पवित्रता व्याप्त है वे अनन्त सिद्ध भगवान अपने परम औदारिक शुद्ध शरीर की समस्त वर्गणाओं को इस क्षेत्र पर बिखरा गये उन पुद्गल वर्गणाओं का अस्तित्व आज भी श्री सम्मेदशिखर को पवित्र कर रहा है।

तीर्थ वन्दना करते-करते निज को तीर्थ बनाना है।
सिद्धों के गुण गाकर हमको, 'विशद' सिद्ध पद पाना है।।

-मुनि विशालसागर

(संघस्थ आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र श्री सम्मेदशिखर स्तवन

सोरठा- सम्मेदाचल धाम, शाश्वत तीरथराज है।
बारंबार प्रणाम, मंगलकारी जगत् में।।

श्री सम्मेद शिखर मंगलमय, शाश्वत तीर्थराज पावन।
भव्य जनों को मोक्ष प्रदायक, तीन लोक में मन भावन।।
जो त्रिकाल तीर्थंकर जिन का, मुनियों का है मुक्तिधाम।
उन सिद्धों के पद पंकज अरु, सिद्ध क्षेत्र को विशद प्रणाम।।1।।
काल अनादि अरु अनंत है, कोई न सृष्टी का कर्त्ता।
जीव रहा चैतन्य स्वरूपी, सर्व लोक सुख-दुःख भर्त्ता।।
रत्नत्रय को पाने वाला, जीव जगत् मंगलकारी।
संयम पथ पर बढ़ने वाला, मोक्ष मार्ग का अधिकारी।।2।।
उज्ज्वल तीर्थ क्षेत्र पावन है, सब तीर्थों में रहा प्रधान।
सरस सुउन्नत है गुणधारी, सुखदायक है अचल महान्।।
अतिशय महिमा कहने वाला, कोई जग में नहीं समर्थ।
लघु शब्दों में महिमा गाना, मेरी चेष्टा का क्या अर्थ।।3।।
भक्ति के उद्रेक हृदय में, मेरे नहीं समाते हैं।
अपनी क्षमता से महिमा हम, भाव सहित कुछ गाते हैं।।
मधुवन का है ताज मनोहर, गगन क्षेत्र जिसका पावन।
ओर छोर न दिखता जिसका, भूमण्डल है सिंहासन।।4।।
क्या राजा ? क्या रंक ? हरी क्या ? चक्रीकाम देव सारे।
इन्द्र और नागेन्द्र सभी मिल, बोलें अनुपम जयकारे।।
तीर्थक्षेत्र के वंदन का शुभ, इन सब ने भी फल पाया।
तीर्थंकर अरु तीर्थ क्षेत्र को, 'विशद' हृदय से जब ध्याया।।5।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

श्री सम्मेदशिखर पूजन

स्थापना

दोहा- तीर्थ क्षेत्र सम्मेद गिरि, शाश्वत रहा महान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(मणुयानंद छन्द)

क्षीर सम नीर हम श्रेष्ठ भर लाए हैं, रोग जन्मादि के नाश को आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर के साथ केशर घिसाई अहा, लक्ष्य भव ताप हरना हमारा रहा।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत अक्षत शुभ मुक्ताफल सम लिए, पूजा के भाव से यहाँ अर्पित किए।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प केशर में अक्षत रंगाए हैं, काम के वाण विध्वंश को आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध नैवेद्य घृत के लिए यह भले, शीघ्र व्याधि क्षुधादि की मम गले।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमय दीप से, श्रेष्ठ ज्योती जले, मोहतम जो लगा, पूर्ण वह अब गले।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दश गंध से, यह बनाई सही, नाश हो कर्म का, प्राप्त हो शिव मही।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफलादि प्रभु के चरण में हम धरें, मोक्षफल शीघ्र ही प्राप्त हम अब करें।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि के अर्घ्य हम लाए हैं, प्राप्त करने सुपद आज हम आए हैं।
तीर्थ की वन्दना आज करके सही, भावना मुक्ति की श्रेष्ठ मेरी रही।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देते शांतिधार हम, दोषों का क्षय होय।
जिन पूजा व्रत में विशद, दोष लगे न कोय।।

शान्तये शांतिधारा...

जिन पूजा के भाव से, होवें कर्म विनाश।
जन्म मरण की श्रृंखला, का हो जाए नाश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा– **शास्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।**
जयमाला गाते यहाँ, करने जिन गुण गान।।

(शम्भू छंद)

तीर्थराज सम्मेद शिखर शुभ, सिद्ध क्षेत्र कहलाता है।
भव्य जीव तीर्थंकर आदी, को शिवपुर पहुँचाता है।।
तीर्थंकर जिन भरत क्षेत्र के, यहाँ से मुक्ति पाते हैं।
स्वर्ग से आकर देव इन्द्र शुभ, प्रभु के चरण बनाते हैं।।1।।

तीर्थ वन्दना करने हेतू, जैन अजैन सभी जाते।
भाव शुद्धि से शक्ति हीन भी, चरणों के दर्शन पाते।।
बाल वृद्ध लूले लंगड़े भी, पर्वत पर चढ़ जाते हैं।
देव यहाँ भूले भटके को, रस्ता सही दिखाते हैं।।2।।

भाव सहित वन्दन करने से, दुर्गति से बच जाते हैं।
मोक्ष मार्ग में कारण है जो, ऐसा पुण्य कमाते हैं।
रत्नत्रय को धारण कर जो, आतम ध्यान लगाते हैं।
अल्प काल में कर्म नाशकर, मोक्ष महल को जाते हैं।।3।।

हुण्डावसर्पिणी काल के कारण, बीस जिनेश्वर मोक्ष गये।
तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, ध्यान लगाकर कर्म क्षये।।
तीव्र पाप का उदय हो जिनका, वह दर्शन न पाते हैं।
चक्रवात तूफान से घिरकर, अन्धे वत् हो जाते हैं।।4।।

अहंकार करने वाले कोई, गिरि पर न चढ़ पाते हैं।
कई बार कोशिश करके भी, नीचे ही रह जाते हैं।।
मोती बने ज्वार के दाने, नम्र भाव जिनने धारे।
किन्तू पापी और कषाई, दर्शन करने को हारे।।5।।

तीर्थराज की करो वन्दना, पुण्य सुफल अतिशय पाओ।
गिरि सम्मेद शिखर पर जाकर, भाग्य शीघ्र ही अजमाओ।।
मुनि आर्यिका बनकर भाई, या श्रावक के व्रत पाओ।
मुक्ति पाएँ तीर्थराज से, 'विशद' भावना यह भाओ।।6।।

दोहा– **महिमा तीरथ राज की, को कर सके बखान।**
शिवपद पाए जीव जो, जाने वह भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **महिमा तीरथ राज की, को कर सके बखान।**
शिवपद पाए जीव जो, जाने वह भगवान।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ

तीर्थंकर चौबीस हुए हैं, श्रेष्ठ ऋद्धि सिद्धी धारी।
पूजनीय गणनायक उनके, हुए जहाँ में अविकारी।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।1।।

दोहा– गण नायक तीर्थेश के, हुए प्रमुख चौबीस।
मुक्ति पद पाएँ 'विशद', झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथजी की टोंक
(ज्ञानधर कूट)

कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, बनकर कीन्हें कर्म विनाश।
हे कुन्थुनाथ त्रयपद के स्वामी !, किया आपने शिवपुर वास।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।2।।

दोहा- तीन लोक के श्रेष्ठतम, कुन्थुनाथ भगवान।
सारे कर्म विनाश कर, पाया पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ बत्तीस लाख, छियानवे हजार सात सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री नमिनाथजी की टोंक
(मित्रधर कूट)

गुण अनन्त को पाने वाले, नमीनाथ जी हुए महान्।
निज गुण पाने हेतु आपका, करते हैं हम भी गुणगान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।3।।

दोहा- रत्नत्रय को धारकर, कर्म घातिया नाश।
नमि जिन मुक्ती पा लिए, करके ज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा कोड़ी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अरहनाथजी की टोंक
(नाटक कूट)

इस संसार सरोवर का कहीं, छोर नजर न आता है।
वियोग आपसे हे अर जिन ! अब, और सहा न जाता है।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।4।।

दोहा- कर्मारिनाशे सभी, अरहनाथ भगवान।
त्रय पद के धारी हुए, शिवपुर किया प्रयाण।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे करोड़ निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

श्री मल्लिनाथजी की टोंक
(संबल कूट)

श्री मल्लिनाथ की महिमा का, कोई भी पार नहीं पाए।
गुण गाथा कौन कहे स्वामी, कहने वाला भी थक जाए।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।5।।

दोहा- जीते काम कषाय को, बने श्री के नाथ।
शिवपुर के राही बने, जग में मल्लिनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि छियानवे करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री श्रेयांसनाथजी की टोंक
(संकुल कूट)

सर्व गुणों को पाने वाले, श्रेयनाथ जिन जग के ईश।
स्वर्ग लोक से इन्द्र चरण में, आकर यहाँ झुकाते शीश।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।6।।

दोहा– सर्व कर्म को नाशकर, शिवपुर किया प्रयाण।
श्रेयस पाने को 'विशद', करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा कोड़ी छियानवे करोड़ छियानवे लाख नौ हजार पाँच सौ बयालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

श्री पुष्पदंतजी की टोंक
(सुप्रभ कूट)

पुष्पदंत जिनराज आपका, दिनकर सा है रूप महान्।
रत्नत्रय को पाकर स्वामी, किया आपने निज कल्याण।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।7।।

दोहा– पुष्पदन्त जिन आप हैं, अविनाशी अविकार।
चरण वन्दना कर रहे, हे प्रभु ! बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि एक कोड़ा कोड़ी निन्यानवे लाख सात हजार चार सौ अस्सी मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री पदमप्रभुजी की टोंक
(मोहन कूट)

दर्श ज्ञान चारित्र पद्मप्रभ, पाकर पाये केवल ज्ञान।
कर्म कालिमा को विनाशकर, पाया शिवपुर में स्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।8।।

दोहा– पद्म प्रभु के दर्श से, होता है अति हर्ष।
सद्गुण का भवि जीव के, होता है उत्कर्ष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा–कोड़ी सत्तासीलाख तियालीस हजार सात सौ, सत्ताईस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री मुनिसुव्रतनाथजी की टोंक
(निर्जर कूट)

मुनिसुव्रत मुनिव्रत के धारी, हुए लोक में सर्व महान्।
कर्मदहन कर किया आपने, 'विशद' आत्मा का उत्थान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।9।।

दोहा– शिवपुर जाके आपने, कीन्हा है विश्राम।
मुनिसुव्रत के पद युगल, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि निन्यानवे कोड़ा कोड़ी नो करोड़ निन्यानवे लाख नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री चन्द्रप्रभजी की टोंक
(ललित कूट)

चन्द्र कान्ति सम चन्द्रनाथ जी, शोभित होते आभावान।
ललित कूट से मुक्ती पाए, शिवपुर दाता हैं भगवान।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।10।।

दोहा– उज्ज्वल गुण धरचन्द्र प्रभु, उज्ज्वलता के कोष।
सर्व कर्म क्षय कर हुए, प्रभु आप निर्दोष।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि नौ सौ चौरासी अरब बहत्तर करोड़ अस्सी लाख चौरासी हजार पाँच सौ पचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री आदिनाथजी की टोंक

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, हुए लोक में मंगलकार।
स्वयं बुद्ध हे नाथ ! आपके, चरणों वन्दन बारम्बार।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।11।।

दोहा– आदिम तीर्थंकर हुए, भक्तों के भगवान।
अष्टापद से शिव गये, करने जग कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथजी की टोंक
(विद्युतवर कूट)

जल चन्दन से भी अति शीतल, शीतल नाथ कहाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, शीतलता पाने आए हैं।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।12।।

दोहा– शीतलता इस भक्त को, कर दो 'विशद' प्रदान।
शिव नगरी के ईश तुम, दो शिव पद का दान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवरकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि अठारह कोड़ा–कोड़ी बयालीस करोड़ बत्तीस लाख, बयालीस हजार नौ सौ पाँच मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अनन्तनाथजी की टोंक
(स्वयंप्रभ कूट)

गुण अनन्त के धारी हैं जो, जिन अनन्त है जिनका नाम।
गुण अनन्त पाने को यह जग, करता बारम्बार प्रणाम।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।13।।

दोहा– पूज्य हुए इस लोक में, हे अनन्त ! जिन आप।
तव गुण पाने के लिए, करूँ नाम का जाप।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि छियानवे कोड़ा–कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख सत्तर हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री संभवनाथजी की टोंक (धवल कूट)

हे सम्भव ! जिन सम्भव कर दो, हमको शिवपुर मार्ग अहा
जो पद पाया है प्रभु तुमने, वह पाने का मम् लक्ष्य रहा।।
चरण वन्दना करने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।
अर्चा करने आज यहाँ पर, बहुत दूर से आए हैं।।14।।

दोहा- सम्भव जिन सम्भाव से, किये कर्म का नाश।
भ्रमण नाश मम हो प्रभु, हो शिवपुर में वास।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा-कोड़ी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पाँच सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास।)

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

है पूज्य लोक में जैन धर्म, जिन वासुपूज्य अपनाये हैं।
जिसने भी जैन धर्म पाया, वह शिवपदवी को पाये हैं।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।15।।

दोहा- जगत पूज्यता पा गये, वासुपूज्य भगवान।
चंपापुर में पाए हैं, प्रभु पाँचों कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथजी की टोंक (आनन्द कूट)

हे अभिनन्दन ! आनन्द धाम, आनन्द कूट से शिव पाए।
आनन्द प्राप्त करने प्रभु जी, हम भी तव चरणों में आए।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।16।।

दोहा- अभिनंदन तव चरण में, वन्दन मेरा त्रिकाल।
भक्त आपको पूजकर, होते मालामाल।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि बहत्तर कोड़ा-कोड़ी सत्तर करोड़ सत्तर लाख ब्यालीस हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

श्री धर्मनाथजी की टोंक (सुदत्तवर कूट)

हे धर्म शिरोमणि धर्मनाथ !, तुम धर्म ध्वजा के धारी हो।
तुम मंगलमय हो इस जग में, प्रभु अतिशय मंगलकारी हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।17।।

दोहा- धर्म धुरन्धर धर्मधर, धर्मनाथ भगवान।
जग जीवों को आपने, दिया धर्म का ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि उनतीस कोड़ा-कोड़ी उन्नीस करोड़ नौ लाख नौ हजार सात सौ पंचानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुमतिनाथजी की टोंक
(अविचल कूट)

हे सुमतिनाथ ! तुमने जग को, शुभ मति दे शिवपद दान किया।
भक्तों को तुमने करुणाकर, होकर सौभाग्य प्रदान किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।18।।

दोहा– कुमति विनाशक आप हो, सुमति नाथ भगवान।
हमको भी हे नाथ ! अब, कर दो सुमति प्रदान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि एक कोड़ा–कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख, इक्यासी हजार सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री शान्तिनाथजी भगवान की टोंक
(कुन्दप्रभ कूट)

हे शांतिनाथ ! शांती दाता, जन–जन को शांती प्रदान करो।
भवि जीवों के उर में स्वामी, अब 'विशद' भावना आप भरो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।19।।

दोहा– शान्ति का दरिया बहे, शान्तिनाथ के द्वार।
सद्भक्ति से भक्त का, होता बेड़ा पार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि नौ कोड़ा–कोड़ी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री महावीर स्वामी की टोंक

तत्त्वों का सार दिया तुमने, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
प्रभु दर्शन करके मन मेरा, गद्गद् होकर हर्षाया है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।20।।

दोहा– महावीर हे वीर ! जिन, सन्मति हे अतिवीर!।
वर्धमान पावापुरी, से पाए भव तीर।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व असंख्यात मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथजी की टोंक
(प्रभास कूट)

जिनवर सुपार्श्व ने संयम धर, निज को निहाल कर डाला है।
प्रभु के चरणाम्बुज का दर्शन, शुभ शिव पद देने वाला है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।21।।

दोहा– जिसने सुपार्श्व का भाव से, किया 'विशद' गुणगान।
अल्प समय में जीव वह, होवें प्रभु समान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि उनचास कोड़ा–कोड़ी चौरासी करोड़ बहत्तर लाख सात हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री विमलनाथजी की टोंक
(सुवीर कूट)

हैं विमलनाथ मल रहित विमल, निर्मलता श्रेष्ठ प्रदान करें।
जो शरणागत बनकर आते, भक्तों का कल्मष पूर्ण हरें।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।22।।

दोहा- विमलनाथ तव चरण में, पाएँ हम विश्राम।
हमको शुभ आशीष दो, बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि सत्तर कोड़ा-कोड़ी साठ लाख छः हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अजितनाथजी की टोंक
(सिद्धवर कूट)

प्रभु अजितनाथ हैं कर्मजयी, तुमने कर्मों का नाश किया।
पाकर के केवलज्ञान प्रभु, इस जग में ज्ञान प्रकाश किया।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।23।।

दोहा- रहे अपावन भक्त हम, पावन हो प्रभु आप।
अजितनाथ का दर्श कर, कट जाते हैं पाप।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि एक अरब अस्सी करोड़ चौवन लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

श्री नेमिनाथजी की टोंक

हे नेमिनाथ ! करुणा निधान, सब पर करुणा बरसाते हो।
जो शरणागत बन जाते हैं, उनको भव पार लगाते हो।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।24।।

दोहा- राज्य तजा राजुल तजी, छोड़ा सब धन धाम।
गिरनारी से शिव गये, तब पद 'विशद' प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व बहत्तर करोड़ सात सौ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथजी की टोंक
(स्वर्णभद्र कूट)

उपसर्गों में संघर्षों में, तुमने समता को धारा है।
कर्मों का शत्रू दल आगे, हे पार्श्व ! आपके हारा है।।
हम भक्त आपके गुण गाकर, यह अनुपम अर्घ्य चढ़ाते हैं।
हे नाथ ! आपके चरणों में हम, सादर शीश झुकाते हैं।।25।।

दोहा- ध्यान लीन होकर प्रभु, सुतप किया दिन रैन।
समता धर पार्श्व जिन, हुए नहीं बैचेन।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

श्री पार्श्वनाथजी का अर्घ (चौपड़ा कुण्ड)

हे पार्श्वनाथ ! करुणा निधान, तव महिमा है मंगलकारी।
हे शांतिदूत ! जिनवर प्रधान, हे वीतराग ! जग हितकारी।।
जो नत होकर तव चरणों में, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाता है।
सौभाग्य प्राप्त कर लेता वह, अन्तिम शिवपुर को जाता है।।
हम भक्ति करने हेतु नाथ, तव चरण शरण में आये हैं।
यह अर्घ्य बनाकर प्रासुक शुभ, प्रभु यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं श्री चौपड़ा कुण्ड विराजित चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ

प्रभु अशुभ भाव की ज्वाला यह, सदियों से जलाती आई है।
उसमें ही जलते रहे 'विशद', चेतन की सुधि न पाई है।।
यह वसु द्रव्यों का अर्घ्य बना, वसु गुण प्रकटाने आए हैं।
पाने अनर्घ अविनाशी पद, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः, श्री सम्मत्तणाण वीर्य सुहमं अवग्गहणं अगुरुलघु अव्वावाहं अष्ट गुण संयुक्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। ***

जयमाला

दोहा- तीर्थराज सम्मेदगिरि, शास्वत् रहा त्रिकाल।
भाव सहित गाते विशद, जिसकी हम जयमाल।।

(पद्धडि छंद)

है तीर्थराज जग में प्रधान, सम्मेद शिखर तीरथ महान्।
तीर्थंकर करते जहाँ ध्यान, शास्वत् कहलाया मोक्ष थान।।
शुभ कूट बने जिसपे मनोग, साधू कई धारें जहाँ योग।
पर्वत ऊँचा सोहे महान्, जो हरा-भरा है शोभमान।।
सब तीर्थ वन्दना करें जीव, जो पुण्य प्राप्त करते अतीव।
शीतल नाला है जहाँ खास, शुभ बना चौपड़ा कुण्ड पास।।
श्री चन्द्रप्रभू हैं पार्श्वनाथ, जिनके पद में मम् झुका माथ।
फिर प्रथम कूट जानो महान्, गणधर चरणों का रहा धाम।।
है कूट ज्ञानधर कुन्थुनाथ, जो मोक्ष-सुपद के हुए नाथ।
फिर कूट मित्रधर है प्रधान, नमिनाथ मोक्ष पाए महान्।।
फिर नाटक कूट है शोभमान, प्रभू अरहनाथ का मोक्ष थान।
फिर कूट सु संवल रहा पास, प्रभू मल्लिनाथ का रहा खास।।
आगे है संकुल कूट धाम, श्री श्रेयनाथ का मोक्ष धाम।
फिर पद्मप्रभु का कूट जान, शुभ कूट सुमोहन रहा मान।।
फिर निर्जर कूट गाया विशेष। शिव पाए मुनिसुव्रत जिनेश।
फिर ललित कूट का रहा नाम, श्री चन्द्रप्रभु का मोक्ष धाम।।

फिर आदिनाथ की टोंक आय, जो अष्टापद से मोक्ष पाय।
फिर विद्युतवर है कूट खास, शीतल जिन पाए मोक्ष वास।।
शुभ कूट स्वयंप्रभ अग्र जाय, श्री अनन्तनाथ शिव लिए पाय।
फिर सम्भव जिनका धवल कूट, जो स्वयं कर्म से गए छूट।।
श्री वासुपूज्य जिनवर महान्, जिन पद के दर्शन हों महान्।
आनन्द कूट है जग प्रधान, अभिनन्दन जिन पूजें महान्।।
शुभ कूट सुदत्तवर पर सदैव, हम पूज रहे जिन धर्म देव।
फिर कूट सुअविचल पे जिनेश जिन सुमति पूजते हैं विशेष।।
शुभ कूट कुन्दप्रभ है महान्, हम पूजें शांति जिन प्रधान।
फिर महावीर की टोंक आय, जो पावापुर से मोक्ष पाय।।
है कूट सुपार्श्व जिन का प्रभास, प्रभु पाए जहाँ से मोक्ष वास।
फिर विमलनाथ का रहा धाम, जानो सुवीर शुभ कूट नाम।।
शुभ स्वर्णभद्र फिर कूट आय, शिव पाए श्री पारस जिनाय।
यह पूज्य बताया तीर्थधाम, मम सिद्धों के पद में प्रणाम।।

घत्ता छंद- जय-जय शिवकारी, भव भयहारी, तीर्थराज जग में पावन।
है मंगलकारी पाप निवारी, 'विशद' लोक में मन भावन।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शास्वत तीरथराज है, गिरि सम्मेद महान्।
'विशद' भाव से पूजता, जिसको सकल जहान।।

इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजा

(स्थापना)

हे पार्श्व प्रभो ! हे पार्श्व प्रभो ! मेरे मन मंदिर में आओ।
विघ्नों को दूर करो स्वामी, जग में सुख शांति दर्शाओ।।
सब विघ्न दूर हो जाते हैं, प्रभु नाम आपका लेने से।
जीवन मंगलमय हो जाता, जिन अर्घ्य चरण में देने से।।
हे ! तीन लोक के नाथ प्रभु, जन-जन से तुमको अपनापन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, है 'विशद' भाव से आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

स्वर्ण कलश में प्रासुक जल ले, जो नित पूजन करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सब दुख दारिद हरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज मैं विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगन्धित मलयागिरि का, चन्दन चरण चढ़ाते हैं।
दिव्य गुणों को पाकर प्राणी, दिव्य लोक को जाते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षय अक्षत, लेकर अर्चा करते हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें प्रभु, चरणों में सिर धरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल चमेली वकुल कुसुम से, प्रभु की पूजा करते हैं।
मंगलमय जीवन हो उनका, सुख के झरने झरते हैं।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर घृत मेवा युत व्यंजन, कनक थाल में लाये हैं।
अर्पित करते हैं प्रभु पद में, क्षुधा नशाने आये हैं।।

विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीप जलाकर सुन्दर, प्रभु की आरति करते हैं।
मोह तिमिर हो नाश हमारा, वसु कर्मों से डरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन केशर आदि सुगंधित, धूप दशांग मिलाये हैं।
अष्ट कर्म हों नाश हमारे, अग्नि बीच जलाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फल केला और सुपारी, इत्यादिक फल लाए हैं।
श्री जिनवर के पद पंकज में, मिलकर आज चढ़ाए हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, अर्घ समर्पित करते हैं।
पूजन करके पार्श्वनाथ की, कोष पुण्य से भरते हैं।।
विघ्न विनाशक पार्श्व प्रभु की, पूजन आज रचाते हैं।
पद पंकज में विशद भाव से, अपना शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(त्रिभंगी छन्द)

स्वर्गों में रहे, प्राणत से चये, माँ वामा उर में गर्भ लिये।
वसु देव कुमारी, अतिशयकारी, गर्भ समय में शोध किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष एकादशि, कृष्णा की निशि, काशी में अवतार लिया।
देवों ने आकर, वाद्य बजाकर, आनन्दोत्सव महत किया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलि पौष एकादशि, व्रत धरके असि, प्रभुजी तप को अपनाया।
भा बारह भावन, अति ही पावन, भेष दिगम्बर तुम पाया।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब क्रूर कमठ ने, बैरी शठ ने, अहि क्षेत्र में कीन्ही मनमानी।
तब चैत अंधेरी, चौथ सवेरी, आप हुए केवलज्ञानी।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक, शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित सातै सावन, अतिमन भावन, सम्मेद शिखर पे ध्यान किए।
वर के शिवनारी, अतिशयकारी, आतम का कल्याण किए।।
श्री विघ्न विनाशक, अरिगण नाशक, पारस जिन की सेव करें।
त्रिभुवन के ज्ञायक शिव दर्शायक, प्रभु के पद में शीश धरें।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- माँ वामा के लाड़ले, अश्वसेन के लाल।
विघ्न विनाशक पार्श्व की, कहते हैं जयमाल ।।

(छंद-तामरस)

चित् चिंतामणि नाथ नमस्ते, शुभ भावों के साथ नमस्ते।
ज्ञान रूप ओंकार नमस्ते, त्रिभुवन पति आधार नमस्ते।।1।।
श्री युत श्री जिनराज नमस्ते, भव सर मध्य जहाज नमस्ते।
सद् समता युत संत नमस्ते, मुक्ति वधु के कंत नमस्ते।।2।।
सद्गुण युत गुणवन्त नमस्ते, पार्श्वनाथ भगवंत नमस्ते।
अरि नाशक अरिहंत नमस्ते, महा महत् महामंत्र नमस्ते।।3।।
शांति दीप्ति शिव रूप नमस्ते, एकानेक स्वरूप नमस्ते।
तीर्थंकर पद पूत नमस्ते, कर्म कलिल निर्धूत नमस्ते।।4।।
धर्म धुरा धर धीर नमस्ते, सत्य शिवं शुभ वीर नमस्ते।
करुणा सागर नाथ नमस्ते, चरण झुका मम् माथ नमस्ते।।5।।
जन जन के शुभ मीत नमस्ते, भव हर्ता जगजीत नमस्ते।
बालयति आधीश नमस्ते, तीन लोक के ईश नमस्ते।।6।।
धर्म धुरा संयुक्त नमस्ते, सद् रत्नत्रय युक्त नमस्ते।
निज स्वरूप लवलीन नमस्ते, आशा पाश विहीन नमस्ते।।7।।

वाणी विश्व हिताय नमस्ते, उभय लोक सुखदाय नमस्ते।
जित् उपसर्ग जिनेन्द्र नमस्ते, पद पूजित सत् इन्द्र नमस्ते।।8।।

दोहा- भक्त्याष्टक नित जो पढ़े, भक्ति भाव के साथ।
सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य पा, हो त्रिभुवन का नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- चरण शरण के भक्त की, भक्ति फले अविराम।
मुक्ति पाने के लिए, करते 'विशद' प्रणाम्।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

दोहा- शाश्वत तीरथराज है, शिखर सम्मेद महान्।
भक्ति भाव से कर रहे, यहाँ विशद गुणगान।।
नव कोटी से देव नव, का करते हम ध्यान।
जाकर तीरथ राज से, पाएँ हम निर्वाण।।

(चौपाई)

शाश्वत तीर्थराज शुभकारी, गिरि सम्मेद शिखर मनहारी।
कण कण पावन जिसका पाया, मुनियों ने जहाँ ध्यान लगाया।।

संत यहाँ आकर तप कीन्हें, निज चेतन में चित्त जो दीन्हें।
सौ सौ इन्द्र यहाँ पर आते, प्रभु के पद में शीश झुकाते।।
हर युग के तीर्थंकर आते, मुक्तिवधू को यहाँ से पाते।
कालदोष के कारण जानो, इस युग का अन्तर पहिचानो।।
बीस जिनेश्वर यहाँ पे आए, गिरि सम्मेद से मुक्ती पाए।
इन्द्रराज स्वर्गों से आए, रत्न कांकिणी साथ में लाए।।
चरण उकेरे जिन के भाई, जिनकी महिमा है सुखदायी।
प्रथम टोंक गणधर की जानो, चौबिस चरण बने शुभ मानो।।
द्वितिय कूट ज्ञानधर भाई, कुन्थुनाथ जिनवर की गाई।
कूट मित्रधर नमि जिन पाए, कर्म नाश कर मोक्ष सिधाए।।
नाटककूट रही मनहारी, अरहनाथ की मंगलकारी।
संबलकूट की महिमा गाते, मल्लिनाथ जहाँ पूजे जाते।।
संकुल कूट श्रेष्ठ कहलाए, श्री श्रेयांस मुक्ती पद पाए।
सुप्रभ कूट की महिमा न्यारी, पुष्पदंत जिन की मनहारी।।
मोहन कूट पद्म प्रभु पाए, जन-जन के मन को जो भाए।
पूज्य कूट निर्जर फिर आए, मुनिसुव्रत जी शिवपद पाए।।
ललितकूट चन्द्रप्रभु स्वामी, हुए यहाँ से अन्तर्यामी।
विद्युतवर है कूट निराली, शीतल जिन की महिमा शाली।।
कूट स्वयंप्रभ आगे आए, जिन अनन्त की महिमा गाए।

धवलकूट फिर आगे जानो, संभव जिन की जो पहिचानो।।
आनन्द कूट पे बन्दर आते, अभिनन्दन जिन के गुण गाते।
कूट सुदत्त श्रेष्ठ शुभ गाते, धर्मनाथ जिन पूजे जाते।।
अविचल कूट पे प्राणी जाते, सुमतिनाथ पद पूज रचाते।
कुन्दकूट पर प्राणी सारे, शान्तिनाथ पद चिह्न पखारे।।
कूट प्रभास है महिमा शाली, जिन सुपार्श्व पद चिह्नों वाली।
कूट सुवीर पे जो भी जाए, विमलनाथ पद दर्शन पाए।।
सिद्धकूट पर सुर-नर आते, अजितनाथ पद शीश झुकाते।
कूट स्वर्णप्रभ मंगलकारी, पार्श्वप्रभु का है मनहारी।।
पक्षी भी तन्मय हो जाते, मानो प्रभु की महिमा गाते।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, जीवन सफल बनाने वाले।।
दूर-दूर से श्रावक आते, शुद्ध भाव से महिमा गाते।
नंगे पैरों चढ़ते जाते, प्रभु के पद में ध्यान लगाते।।
भाँति-भाँति की भजनावलियाँ, वीतराग भावों की कलियाँ।
पुण्यवान ही दर्शन पावें, नरक पशु गति बंध नशावें।।
तीर्थ वन्दना करने जावें, कर्मों के बन्धन कट जावें।
देव वन्दना करने आवें, चमत्कार कई इक दिखलावें।।
भूले को भी राह दिखावें, दुखियों के सब दुःख मिटावें।
कभी स्वान बन कर आ जाते, डोली वाले बनकर आते।।

गिरवर तुमरी बलिहारी, भाव सहित गाते हैं सारी।
तुमरे गुण सारा जग गाए, सूर्य चाँद महिमा दिखलाए।।
सन्त मुनि अर्हन्त निराले, शिव पदवी को पाने वाले।
गिरि सम्मेद शिखर की महिमा, बतलाने आये हैं गरिमा।।
तुम हो सबके तारणहारे, दीन हीन सब पापी तारे।
आप स्वर्ग मुक्ती के दाता, ज्ञानी अज्ञानी के त्राता।।
तुमरी धूल लगाकर माथे, भाव सहित तव गाथा गाते।
मेरी पार लगाओ नैया, भव-सिन्धु के आप खिवैया।।
हमको मुक्ती मार्ग दिखाओ, जन्म मरण से मुक्ति दिलाओ।
सेवक बनकर के हम आए, पद में सादर शीश झुकाए।।

दोहा- 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
सुख-शांती पावे अतुल, बने श्री का ईश।।
महिमा शिखर सम्मेद की, गाएँ मंगलकार।
उसी तीर्थ से ही स्वयं, पावे मुक्ती द्वार।।

जाप- ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः।

* * *

निर्वाण क्षेत्र सम्मेदशिखर की आरती

करूँ आरती तीर्थराज की, भव तारक पावन जहाज की।
तीर्थंकर जिनवर गणधर की, अगणित मुक्त हुए मुनिवर की।। करूँ आरती ..
भव-भव के दुःख मैटनहारी, बनते प्राणी संयमधारी।
तीर्थराज है मंगलकारी, जिसकी महिमा जग से न्यारी।। करूँ आरती ..
अष्टापद में आदि नाथ की, गिरनारी पर नेमिनाथ की।
चम्पापुर में वासुपूज्य की, पावापुर में वीर नाथ की।। करूँ आरती ..
ज्ञान कूट पर कुन्थुनाथ की, मित्र कूट पर नमीनाथ की।
नाट्य कूट पर अरहनाथ की, संवर कूट पर मल्लिनाथ की।। करूँ आरती ..
संकुल कूट पर श्री श्रेयांस की, सुप्रभ कूट पर पुष्पदंत की।
मोहन कूट पर पद्मप्रभु की, निर्जर कूट पर मुनिसुव्रत की।। करूँ आरती ..
ललित कूट पर चन्द्र प्रभु की, विद्युत कूट पर शीतल जिन की।
कूट स्वयंभू श्री अनंत की, धवल कूट पर संभव जिन की।। करूँ आरती ..
कूट सुदत्त पर धर्मनाथ की, आनंद कूट पर अभिनंदन की।
अविचल कूट पर सुमतिनाथ की, शांति कूट पर शांतिनाथ की।। करूँ आरती ..
कूट प्रभास पर श्री सुपार्श्व की, अरु सुवीर पर विमलनाथ की।
सिद्ध कूट पर अजितनाथ की, स्वर्णभद्र पर पार्श्वनाथ की।। करूँ आरती ..
चरण कमल में श्री जिनवर की, दिव्य दीप से सूर्य प्रखर की।
'विशद' भाव से श्री गिरवर की, सिद्ध क्षेत्र जो है उन हर की।। करूँ आरती ..

पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।
विशद भावना है यही, पाएँ हम शिवधाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।

नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहीक्षेत्र में ध्यान लगाए।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई।।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयं भू गाए।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।

श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।
पूजा करते हैं नर–नारी, गीत भजन गाते मनहारी।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार–बार जिन दर्शन पाएँ।।
पार्श्व प्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।
बड़ा गाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो।।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिक्षेत्र बतलाया।
सिरपुर तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई।।
तीर्थ अडिंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।

दोहा– पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख–शांति सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

* * *

श्री सम्मेदशिखर की आरती

भक्ति का प्रसार है, महिमा अपरम्पार है।
श्री सम्मेद शिखर पर्वत की, हो रही जय-जयकार है।। टेक।।
दूर-दूर से भक्त यहाँ पर, वन्दन करने आते हैं।-2
तीर्थ वन्दना करने वाले, जय-जयकार लगाते हैं।-2
शास्वत तीर्थ क्षेत्र की बन्धु, महिमा का न पार है।। श्री सम्मेद..।।1।।
बीस जिनेश्वर इस चौबीसी, के शिव पदवी पाए हैं।-2
कर्म नाशकर अन्य मुनीश्वर, शिवपुर धाम बनाए हैं।-2
शास्वत तीर्थराज मुक्ती का, मानो अनुपम द्वार है।। श्री सम्मेद..।।2।।
जीव अनन्तानन्त यहाँ से, आगे मुक्ती पाएँगे।-2
हम भी उनके साथ में बन्धु, सिद्ध शिला पर जाएँगे।-2
स्वप्न सजाते हैं ऐसा जो, हो जाता साकार है।। श्री सम्मेद..।।3।।
भाव सहित वन्दन करने से, नरक पशू गति नश जाए।-2
दुष्कृत विकृत अल्प आयु भी, वह प्राणी फिर ना पाए।-2
जन-जन के जीवन में गिरि का, 'विशद' बड़ा उपकार है।। श्री सम्मेद..।।4।।
तीर्थ वन्दना करने को हम, आज यहाँ पर आए हैं।-2
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, यह सौभाग्य जगाए हैं।-2
'विशद' आत्मा का हमको भी, करना अब उद्धार है।। श्री सम्मेद..।।5।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभू पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें, प्रभु कर दो भव से पार- आज थारी.....
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्मे है काशीराज- आज थारी.......।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज- आज थारी.......।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी.......।।3।।
नथमल को तुम स्वप्न दिखाया, पर्वत के ऊपर प्रगटाया।
चंवलेश्वर के धाम- आज थारी.......।।4।।
चँवले की मूरत है प्यारी, जो है भारी अतिशयकारी।
हुए कई चमत्कार- आज थारी.......।।5।।
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी, भव-दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी.......।।6।।
''विशद'' आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी आरती......।।7।।

भजन

(तर्ज - तुमसे लागी लगन...)

तुम हो तारण तरण, वीर संकट हरण, पारस प्यारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।
कृपा हम पर करो, कष्ट सारे हरो, जिन हमारे।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
काशी नगरी में जन्म लिया है, वामादेवी को धन्य किया।
अश्वसेन कुँवर, धरी वन की डगर, संयम वारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
तुमने छोड़ा है धनधाम सारा, छोड़ जग में सभी का सहारा।
तपसी से यह कहा, क्यों जलाते अहा, नाग कारें।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
मंत्र नागों को प्रभु ने सुनाया, जन्म स्वर्गों में जीवों ने पाया।
लिये उपकार जिन, पार्श्व जी स्वार्थ बिन, प्रभु हमारे।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे।।
प्रभु पारस ने ध्यान लगाया, कमठ पापी ने उपसर्ग ढाया।

धरणेन्द्र पद्मावती, आए नागपति, सुर विचारे ।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे ।।
फण को पद्मावती ने फैलाया, प्रभु पारस को ऊपर बैठाया।
धरणेन्द्र आया वहाँ, फण का छत्र बना, उपसर्ग टारे ।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे ।।
केवलज्ञान प्रभु ने जगाया, 'विशद' जीवों ने उपदेश पाया।
गये सम्मेदगिरि, पाये मुक्तिश्री, जिन हमारे ।।
हम तो आये हैं चरणों तुम्हारे ।।

* * *

श्री उपसग्गहर पार्श्वनाथ स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी कृत)

उवसग्गहरं पासं, पासं वन्दामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्ननासं, मंगल-कल्याण आवासं ।।1 ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेदि जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ।।2 ।।
चिट्ठदु दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होदी।
णर तिरिएसु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख-दोगच्चं ।।3 ।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपावय सरिसे।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।4 ।।
ॐ अमर तरु काम धेणु, चिन्तामणि-कामकुंभमादिया।
सिरी पासणाह-सेवा, ग्गहणे सव्वे वि दासत्तं ।।5 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-सोग-दोहग्गं।
कप्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह दंसणेण समफल हेउ स्वाहा ।।6 ।।
ॐ ह्रीं णमिऊण पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंदं।
सिरी कामराय कलियं, पासजिणंदं णमंसामि ।।7 ।।
ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर-विज्जामन्तेण झाण झाएज्जा।
धरणे पउमादेवी, ॐ ह्रीं क्ष्म्ल्व्र्यं स्वाहा ।।8 ।।
ॐ थुणेमि पासं, ॐ ह्रीं पणमामि परमभत्तीए।
अट्ठक्खर धरणिंदो, पउमावइ पयडिया कित्ती ।।9 ।।
ॐ णट्ठट्ठ-मयट्ठाणे-पणट्ठकम्मट्ठ-णट्ठ संसारे।
परमट्ठ-निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणाधीसरं वन्दे ।।10 ।।
इह संथुअदो महायश ! भत्तिब्भर-णिब्भरेण हिदयेण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे-भवे पास जिणचन्दं ।।11 ।।

* * *

श्री पाश्र्वनाथ स्तोत्रम्

नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं, शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाथ शीशं ।।
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं, नमो देवदेवं सदा पाश्र्वनाथं ।।1 ।।
गजेन्द्रं मृगेन्द्रं गह्यो तू छुड़ावै, महा आगतैं नागतैं तू बचावै ।।
महावीर तैं युद्ध में तू जितावै, महा रोगतैं बंधतैं तू छुड़ावै ।।2 ।।
दुखी दुःखहर्त्ता सुखी सुखकर्त्ता, सदा सेवकों को महानन्द भर्त्ता ।।
हरे यक्षराक्षस भूतं पिशाचं, विषं डाकिनी विघ्न के भय अवाचं ।।3 ।।
दरिद्रीन को द्रव्य के दान दीने, अपुत्रीन को तू भले पुत्र कीने ।।
महासंकटों से निकारै विधाता, सबै संपदा सर्व को देहि दाता ।।4 ।।
महाचोर को वज्र को भय निवारे, महापुण्य के पुंजतै तू उबारै ।।
महाक्रोध की अग्नि को मेघधारा, महालोभशैलेश को वज्र भारा ।।5 ।।
महा मोह अंधेर को ज्ञान भानं, महाकर्म कांतार को दौ प्रधानं ।।
किये नाग-नागिन अधोलोकस्वामी, हस्योमान तू दैत्य को हो अकामी ।।6।।
तुही कल्पवृक्षं तुही कामधेनुं, तुही दिव्य चिंतामणि नाग एनं ।।
पशु नर्क के दुःखतैं तू छुड़ावै, महास्वर्गतै मुक्ति मैं तू बसावै ।।7 ।।
करै लौह को हेम पाषाण नामी, रटै नाम सो क्यों न हो मोक्षगामी ।।
करै सेव ताकी करैं देव सेवा, सुने बैन सोही लहै ज्ञान मेवा ।।8 ।।

जपै जाप ताको नहीं पाप लागै, धरे ध्यान ताके सबै दोष भागै ।।
बिना तोहि जाने धरे भव घनेरे, तुम्हारी कृपा तैं सरैं काज मेरे ।।9 ।।

दोहा

गणधर इन्द्र न कर सकैं, तुम विनती भगवान।
'द्यानत' प्रीति निहारकैं, कीजे आप समान ।।

* * *

निर्वाण काण्ड

दोहा- वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
विशद काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज ।।

(शम्भू छंद)

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम ।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश ।।
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण ।।

कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरी पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार।।
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान।।
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण।।
श्री बलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम माथ।।
राम हनू सुग्रीव नील अरु, गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील।।
नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लगाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज।।
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार।।
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ।।

अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार।।
वंशस्थल के पश्चिम दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण।।
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण।।
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश।।
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण।।
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार।।
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्पार।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार।।
फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण।।
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।

अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ।।
पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम।।
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान।।
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिच्छत्र में पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ।।
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रहीं महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान।।
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष।।
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव।।
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान।।
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण।।

अञ्चलिका

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग।।
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ महा इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष।।
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत।।
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन।।
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प चरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान।।
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन।।
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन।।
दुःख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण।।

श्री लब्धि विधान व्रत कथा

प्रथम नमू जिन वीर पद, पुनि गुरु गौतम पाय।
लब्धि विधान कथा कहूँ, शारद होहु सहाय।।

काशी देश में वाराणसी नामकी नगरी का महाप्रतापी विश्वसेन राजा था। उसकी रानी का नाम विशालनयना था, एक दिन राजा ने कौतुकपूर्ण हृदय से नाटक का खेल करवाया। नाटक के पात्रों ने राजा को प्रसन्नतार्थ अनेक प्रकार गीत, नृत्य, हावभाव, विभ्रमादिक पूर्वक नाटक का खेल खेलना आरम्भ कर दिया, सो राजा-रानी और सब पुरजन अपने योग्य आसनों पर बैठकर सहर्ष अभिनय करने लगे।

उन नाटक का पात्रों के विविध भेष और हावभावों से रानी का चित्त चंचल हो उठा, और वह चमरी और रंगों नामकी अपनी दो सखियों सहित घर से निकल पड़ी तथा कुसंग में पड़कर अपना शीलधर्मरूपी भूषण को बैठी। वह ग्रामोग्राम भ्रमण करती हुई वेश्या कर्म करने लगी।

जीवों के भाव तथा कर्मों की गति विचित्र है। देखो रानी, रनवास के सुख छोड़कर गली-गली की कुत्ती कुत्ती हो गई। सत्य है, इन नाटकों से कितने घर नहीं उजड़े ? रानी जैसी को यह दशा हुई तो अन्य जनों का कहना ही क्या है ?

राजा भी अपनी प्रियतमा के वियोगजनित दुःख को न सह सकने के कारण पुत्र को राज्य देकर वन में चला गया। और इष्टवियोग (आर्तध्यान) से मरकर हाथी हुआ, सो वन में भटकते-भटकते दर्शन हो गया और धर्मबोध भी मिला, जिसे वह हाथी सम्यक्त्व को प्राप्त करके अणुव्रत पालन करने लगा और आयु के अन्त में चया, पाटलीपुत्र नगर में महीचन्द्र नाम का राजा हुआ।

यह महीचन्द्र राजा एक दिन वनक्रीड़ा को गया था। इसके पुण्योदय से वहाँ (उद्यान में) श्री मुनिराज के दर्शन हो गये। तब सविनय साष्टांग नमस्कार करके राजा धर्मश्रवण की इच्छा से वहाँ बैठ गया। इतने में कानी, कुबड़ी और कोढ़ी ऐसी तीन कन्याएँ अत्यन्त दुःखित हुई वहाँ आई। उन्हें देखकर राजा महीचन्द्र को मोह उत्पन्न हुआ, तब राजा ने श्री गुरु से अपने मोह उत्पन्न का कारण पूछा-

तब श्री गुरु ने इनके भवांतर का सम्बन्ध कह सुनाया कि राजन् ! तू अब से तीसरे भव में बनारस का राजा विश्वसेन था और रानी तेरी विशालनयना थी, सो नाटक का अभिनय देखते हुए नाटककार पात्रों के हावभावों से चंचलित होकर तेरी रानी अपनी रंगी और चमरी नामकी दो दासियों सहित निकल कर कुपथगामिनी हो गई।

सो वे तीनों वेश्याकर्म करती हुई एक समय किसी राजा के पास कुछ याचना को जा रही थी कि रास्ते में परम दिगम्बर मुनिराज को देखकर अपने कार्य के साधन में अपशुकन मानने लगी और रात्रि समय मुनिराज के पास आकर अपने घृणित स्वभावानुसार हावभाव दिखाने और मुनिराज के ध्यान में विघ्न करने लगी, परन्तु जैसे कोई धूल फेंककर सूर्य को मलीन नहीं कर सकता हैं, उसी प्रकार से वे कुलटाऐं श्री मुनिराज को किंचित् भी ध्यान से न चला सकीं। सत्य हैं क्या प्रलय की पवन कभी अचल सुमेरु को चला सकती है ?

स्त्री चरित्र के साथ-साथ स्त्रियों की प्यारी रात्रि पूर्ण हुई। प्रातःकाल हुआ। सूर्य उदय होते ही वे दुष्टनी विफल मनोरथ होकर वहाँ से चली गयीं और यहाँ मुनिराज के निश्चल ध्यान के कारण देवों ने जय-जयकार शब्द करके पंचाश्चर्य किये।

निदान वे तीनों मुनि को उपसर्ग करने के कारण, गलित कोढ़ को प्राप्त हुई, रूप, कला, सौन्दर्य सब नष्ट हो गया और आयु के अन्त में मरकर पाँचवें नरक गई। बहुत काल तक वहाँ से दुःख भोगकर उज्जैनी के पास ग्रामपलास नाम के एक गृहस्थ की पुत्रियाँ हुई हैं, सो छोटी अवस्था में माता-पिता मर गये।

पूर्व पाप के कारण ये तीनों प्रथम कुरुपां, कानी, कुबड़ी, कोढ़ी और तिस पर भी भूंड वचन बोलने वाली है, इसलिये ग्राम से बाहर निकाल दी गई है। वहाँ से भटकती यहाँ आई हैं और तू पनी पट्टरानी के वियोग से दुःखित होकर मरा, सो हाथी हुआ, तब श्री मुनिराज के उपदेश से सम्यक्त्व सहित पंचाणुव्रत पालन करके मरा, सो स्वर्ग में देव हुआ, तब श्री मुनिराज के उपदेश से सम्यक्त्व सहित पंचाणुव्रत पालन करके मरा, सो स्वर्ग में देव हुआ और देव पर्याय से आकर यहाँ महीचन्द्र नामका राजा हुआ है। सो इनका तेरा पूर्वजन्मों का सम्बन्ध होने से तुझे यह मोह हुआ है।

तब राजा ने कहा-महाराज ! क्या कोई उपाय ऐसा है कि जिससे ये कन्यायें पापों से छूटे ?

तब श्री गुरु ने कहा-राजन् ! सुनो, यदि वे श्रद्धापूर्वक लब्धिविधान व्रत करें तो सहज ही इस पाप से छुटकारा पावेंगी। इस व्रत की विधि इस प्रकार है-

भादो, माघ और चैत्र सुदी एकम से तीज तक यह व्रत एक वर्ष में ऐसे 5 वर्ष तक करें। पश्चात् उद्यापन करें अथवा दुगुना व्रत करें। व्रत के दिनों में या तो तेला करे या एकांतर उपवास करे या एकासना ही नित्य करें। और श्री महावीर स्वामी की प्रतिमा का पंचामृताभिषेकपूर्वक पूजनार्चन करें।

तीनों काल सामायिक करें- 'ॐ ह्रीं महावीरस्वामिने नमः' यह 108 जाप करें। जागरण और भजन करें।

उद्यापन की विधि जब व्रत पूर्ण हो जावे, तब सकल संघ को भोजन करावे और संघ में चार प्रकार का दान करें। शास्त्रों का प्रचार करें, पूजन के उपकरण व शास्त्री जिनालय में पधरावें इत्यादि।

इस प्रकार व्रत की विधि और फल सुनकर उन तीनों कन्याओं ने राजा की सहायता से व्रत पालन किया और समाधिमरण कर पाँचवें स्वर्ग में देव हुई। राजा महीचन्द्र भी दीक्षा धर तप करके स्वर्ग गया।

विशालनयना नाम रानी का जीव जो देव हुआ था, सो मगधदेश के वाडवनगर में काश्यप गौत्रीय सांडिल्य नाम ब्राह्मण की सांडिल्या स्त्री के गौतम नाम का पुत्र हुआ था तथा चमरी व रंगी के जीव भी देव पर्याय से चयकर मनुष्य हो तपकर उत्तम गति को प्राप्त हुए।

जब श्री महावीर भगवान को केवलज्ञान हुआ परन्तु वाणी नहीं खीरी इसका कारण इन्द्र ने जाना कि गणधर बिना वाणी नहीं खिरती है, सो इन्द्र गौतम ब्राह्मण के पास 'त्रैकाल्यं द्रव्य षटकं' इत्यादि नवीन श्लोक बनाकर साधारण भेष में गया और उसका अर्थ पूछा-

जब गौतम उसका अर्थ लगाने में गड़बड़ाया तब इन्द्र उसे भगवान के समवशरण में ले आया, सो मानस्तम्भ देखते ही गौतम का मान भंग हो गया और उन्होंने प्रभु के सम्मुख जाकर नमस्कार करके दीक्षा ली। सो जिनकथित चारित्र के प्रभाव से उसे चारों ज्ञान हो गया और वह भगवान के गणधरों में प्रथम गणधर हुए, कितनेक काल जीवों को संबोधन किया और महावीर प्रभु के पश्चात् केवलज्ञान प्राप्त करके निर्वाणपद की प्राप्ति हुआ। उन गौतमस्वामी को हमारा नमस्कार हो।

लब्धि विधान व्रत फल थकी, विशालनयना नार।
गणधर हो लह मोक्षपद, किये कर्म सब क्षार।।

-संकलन मुनि विशालसागर